ज्योतिर्गमय

संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका

भारतीय- शिक्षण- संस्थानम् :- " तक्षशिला विश्वविद्यालय: "

आत्मानं विद्धि

अंक ४४, जनवरी २०२४, पौष मास, विक्रम संवत् २०८०

मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयास:

"2024 - नववर्षस्य शुभकामना: "

लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु...

आंग्लनववर्ष २०२४ की अनन्त मंगलमय शुभकामनाएं ...

ईश्वर सदैव आप सब को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते रहें। आप सदा नव- नूतन वर्ष में कर्मों में कर्तापन का त्याग करते हुए प्रमुदित मन से स्वयं का नव सृजन करें तथा मानव कल्याण का एक सकारात्मक साधक बनें।

नव वर्ष २०२४ में ध्यान रखें मधुर संबंध प्रेम से अंकुरित होते हैं। जीवंत रहते हैं संवाद से।

2024

महसूस होते हैं संवेदनाओं से, जीये जाते हैं दिल से।
मुरझा जाते है शंकाओं से और बिखर जाते अहंकार से।
अत: सम्बन्धों में सहजता, सरलता, कोमलता और मधुरता रखें।

" आप सभी के अभ्युदय की प्रभु से शुभमंगलमय कामनाएं करता हूं "

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्व: कामानवाप्नोतु सर्व: सर्वत्र नन्दतु।।

अर्थात् सब लोग कठिनाइयों को पार करें,सबका कल्याण ही कल्याण हो, सभी की मनोकामनाएं पूर्ण हों, सभी हर परिस्थितियों में आनंदित हों,सुखी रहें।

सम्पादक: - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

सरस्वती- आराधना - स्थलम् ...

" तक्षशिला - विश्वविद्यालय: "

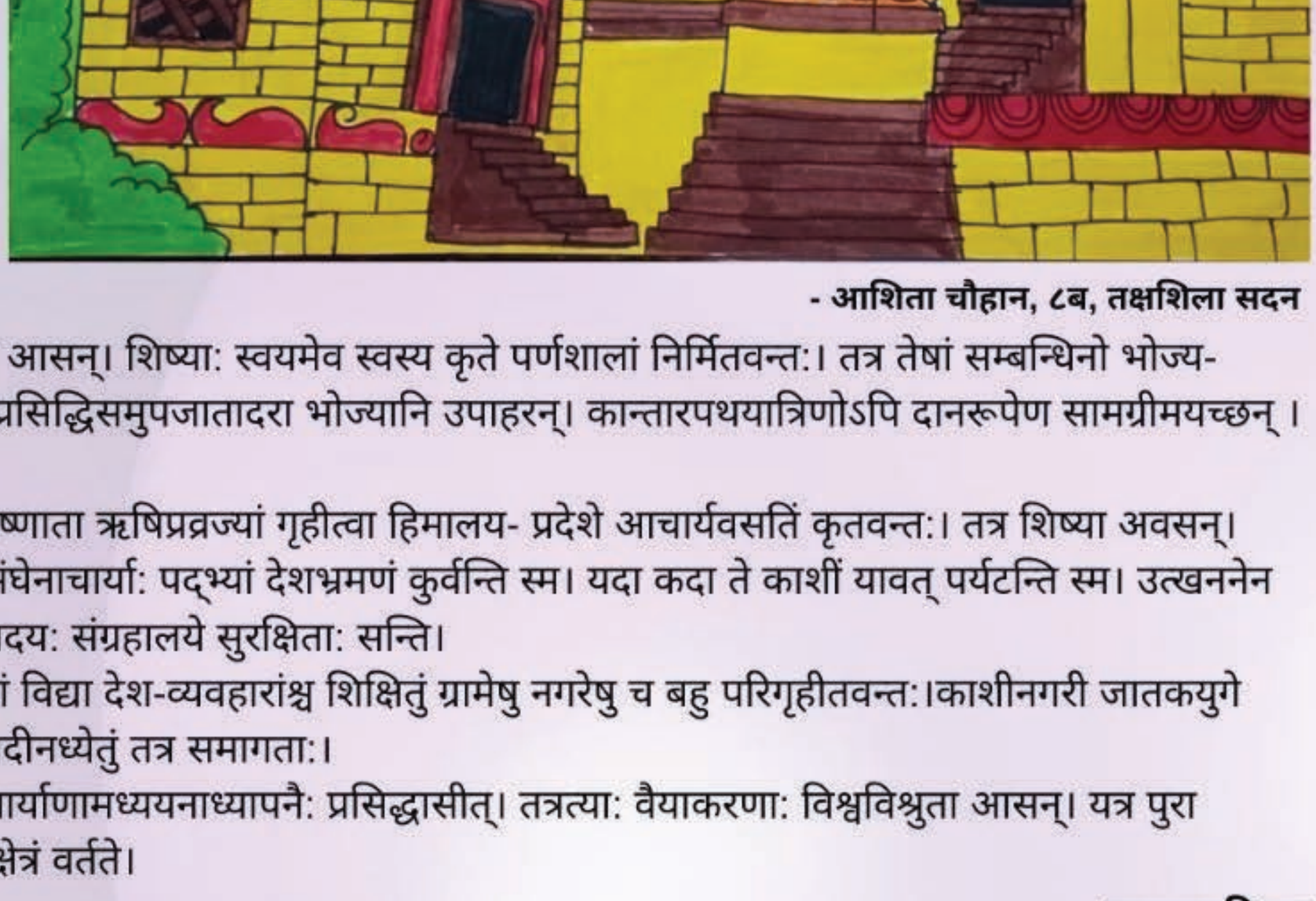

तक्षशिला- विश्वविद्यालयो महाभारतकालत: सुप्रसिद्ध आसीत्। तक्षशिला- नगरं राजधानी बभूव। तत्र विद्यार्थिन: काशी- राजगृह- पंचाल- मिथिलोज्जयिनीत:समागता:। गौतमबुद्धस्य चिकित्सको जीवकस्तक्षशिलायामध्येतुं पाटलिपुत्राद् गतवानासीत्। तत्र विश्वविद्यालयस्य ध्वंसावशेषास्तस्य प्राक्तनगौरवगाथां दर्शयन्ति। विश्वविद्यालयस्य नैसर्गिक- दृश्यं रमणीयमासीत्। समीपमेव तस्य नदीप्रवाहोऽशोभत। विश्वविद्यालय- भवनानि पर्वताधित्यकासु निर्मितानि बभूवु:। यथा जातक- साहित्यं निदर्शयति, तस्मिन् युगे नगरमध्येऽवस्थितेषु विद्यालयेषु शिक्षा सम्यक् नाभवत्। वनमध्य एवा ध्ययनाध्यापनयो: सौकर्यं सम्मतमासीत्।

- आशिता चौहान, ८ब, तक्षशिला सदन

अरण्येषु मार्गतो नातिदूरं विद्यालया: स्थापिता आसन्। शिष्या: स्वयमेव स्वस्य कृते पर्णशालां निर्मितवन्त:। तत्र तेषां सम्बन्धिनो भोज्य- पदार्थान् प्रहितवन्त:। जनपदवासिन आचार्य प्रसिद्धिसमुपजातादरा भोज्यानि उपाहरन्। कान्तारपथयात्रिणोऽपि दानरूपेण सामग्रीमयच्छन्। केचिज्जानपदा: संस्थाया कृते गा: समर्पयन्।

शतशो नैष्ठिकब्रह्मचारिणो वेदेषु शिल्पेषु च निष्णाता ऋषिप्रव्रज्यां गृहीत्वा हिमालय- प्रदेशे आचार्यवसतिं कृतवन्त:। तत्र शिष्या अवसन्। शिष्याणां संख्या पंचशतं यावद् बभूव। तेषां संघेनाचार्या: पद्भ्यां देशभ्रमणं कुर्वन्ति स्म। यदा कदा ते काशीं यावत् पर्यटन्ति स्म। उत्खननेन तक्षशिलाया: येऽवशेषा लब्धा तेषां शिलालेखादय: संग्रहालये सुरक्षिता: सन्ति।

तक्षशिलाया: स्नातका: पर्यटन्त: सर्वेषां मतानां विद्या देश-व्यवहारांश्च शिक्षितुं ग्रामेषु नगरेषु च बहु परिगृहीतवन्त:।काशीनगरी जातकयुगे विद्योपासनाभिर्विश्रुतासीत्। सौराष्ट्र छात्रा वेदादीनध्येतुं तत्र समागता:।

महर्षिपाणिनेर्जन्मभूमि: शालातुरी व्याकरणाचार्याणामध्ययनाध्यापनै: प्रसिद्धासीत्। तत्रत्या: वैयाकरणा: विश्वविश्रुता आसन्। यत्र पुरा शालातुरी स्थिता तत्रेदानीं लहुर (लाहौर)इति क्षेत्रं वर्तते।

- सम्पादकीयम्

सूक्तिमालिका

नैतिक शिक्षा तथा जीवनमूल्यों की शास्त्रीय बातें

" विद्या... "

१.अध्यात्मविद्या विद्यानाम् - श्रीमद्भगवद्गीता १०/३२
विद्याओं में अध्यात्म विद्या मैं हूं (श्रीकृष्ण)

२. सा विद्या या विमुक्तये - विष्णु पुराण १/१९/४१
वही विद्या है जो मनुष्य को मुक्ति प्रदान करे।

३. विद्या योगेन रक्ष्यते - महाभारत उद्योग पर्व ३४/४०
अभ्यास से विद्या की रक्षा होती है।

४. आलस्योपहता विद्या - चाणक्य नीति ५/७
आलस्य करने से विद्या नहीं आती है।

५. विद्या धर्मेण शोभते
विद्या धर्म से (अच्छे आचरण से) शोभित होती है।

६. विद्या ददाति विनयम् - हितोपदेश
विद्या विनय देती है, मनुष्य को विनम्र बनाती है।

७. विद्या विहीन: पशु: - नीतिशतकम्
विद्या से विहीन मनुष्य पशुतुल्य होता है।

८. अभ्यासाद् धार्यते विद्या - चाणक्य नीति
अभ्यास करते रहने से विद्या स्थिर रहती है।

९. क्षणनाशे कुतो विद्या - चाणक्य नीति
एक क्षण भी बेकार गया तो विद्या कहां ?

१०. विद्यारत्नं महाधनम् - चाणक्य नीति
विद्यारूपी रत्न सबसे बड़ा धन है।

नैतिक शिक्षा - श्लोक:

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषा: ।
सुस्वादुतोया: प्रभवन्ति नद्य:
समुद्र - मासाद्य भवन्त्यपेया:।।

अर्थात् - अच्छाइयां भले लोगों में गुण के रूप में रहती हैं किन्तु अधम लोगों में जाकर वे दोष बन जाती हैं।नदियां स्वादिष्ट, मधुर जल वाली पैदा होती हैं किन्तु सागर में पहुंचकर वे न पीने योग्य बन जाती हैं। अत: संगति का प्रभाव महान् होता है। हमें अच्छी संगति ही करनी चाहिए और जीवन में अच्छा बनने का प्रयास करना चाहिए।

" भारतजनताऽहम् "

अभिमानधना विनयोपेता, शालीना भारतजनताऽहम्।
कुलिशादपि कठिना कुसुमादपि, सुकुमारा भारतजनताऽहम्।।१.

निवसामि समस्ते संसारे , मन्ये च कुटुम्बं वसुन्धराम्।
प्रेय: श्रेय: च चिनोम्युभयं, सुविवेका भारतजनताऽहम्।।२.

विज्ञानधनाऽहम् ज्ञानधना, साहित्यकला- संगीतपरा।
अध्यात्मसुधातटिनी - स्नानै: , परिपूता भारतजनताऽहम्।।३.

मम गीतैर्मुग्धं समं जगत् , मम नृत्यैर्मुग्धं समं जगत्।
मम काव्यैर्मुग्धं समं जगत् रसभरिता भारतजनताऽहम्।।४.

उत्सवप्रियाऽहम् श्रमप्रिया, पदयात्रा- देशाटन- प्रिया।
लोक्रीडासक्ता वर्धेऽतिथिदेवा, भारतजनताऽहम् ।।५.

मैत्री मे सहजा प्रकृतिरस्ति , नो दुर्बलताया: पर्याय: ।
मित्रस्य चक्षुषा संसारं , पश्यन्ती भारतजनताऽहम्।।६.

विश्वस्मिन् जगति गताहमस्मि, विश्वस्मन् जगति सदा दृश्ये।
विश्वस्मन् जगति करोमि कर्म, कर्मण्या भारतजनताऽहम्।।७.

- पद्मश्री डॉ. रमाकांत शुक्ल

" महर्षि पाणिनि- जीवन- वृत्तम् ..."

(विश्व का प्रतिष्ठित, परिमार्जित, अद्भुत, सारगर्भित वैज्ञानिक और ऐतिहासिक संस्कृत व्याकरण के प्रणेता आचार्य पाणिनि)

इन्द्रश्चन्द्र: काशकृत्स्नाऽऽपिशली शाकटायन:।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा: जयन्त्यष्टादिशाब्दिका: ।। - (कविकल्पद्रुम)

महर्षि पाणिनि के जीवन वृत्त के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन है, पतंजलि के महाभाष्य (१.१.२०)से पता चलता है कि उनकी माता का नाम दाक्षी था। श्री युधिष्ठिर मीमांसक ने उनका काल लगभग २८०० विक्रम पूर्व माना है किंतु डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने उनका समय ५०० ई. पूर्व के मध्य निश्चित किया है और उन्हें नंद राजा महानंद का समकालीन बताया है। गणतंत्र महोदधि के आधार पर उनका जन्म स्थान शालातुर नामक ग्राम बताया जाता है किंतु श्री युधिष्ठिर मीमांसक का कथन है कि शालातुर पाणिनि के पूर्वजों का वासस्थान था। पाणिनि स्वयं कहीं अन्यत्र रहते थे। उन्होंने पाणिनि को वाहीक देश या उसके आति समीप का निवासी माना है।

कथा सरित्सागर के अनुसार उनके गुरु का नाम वर्ष था और वे पढ़ने में अधिक प्रखर न थे। पंचतंत्र के एक श्लोक (सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिने: - मित्रसम्प्राप्ति) से विदित होता है कि इनको सिंह ने मारा था। वैयाकरणों में किंवदन्ती है कि इनकी मृत्यु त्रयोदशी को हुई थी। इस तिथि पर आज भी पाणिनीय वैयाकरण व्याकरण का पठन- पाठन नहीं करते।

पाणिनि का प्रधान ग्रंथ "अष्टाध्यायी सूत्र पाठ" या "अष्टाध्यायी" है। इसमें लगभग ४००० सूत्र हैं।

" माहेश्वराणि सूत्राणि "

(महर्षि पाणिनि के चतुर्दश सूत्र - जिन्हें माहेश्वर सूत्र कहा जाता है)
ये सूत्र ही संस्कृत व्याकरण और भाषा विज्ञान के आधार हैं...

इसके साथ ही साथ उन्होंने धातुपाठ, गणपाठ, उणादि सूत्र और लिंगानुशासन की भी रचना की है। ये चारों ग्रंथ वस्तुतः अष्टाध्यायी के परिशिष्ट हैं। उनके अन्य ग्रन्थों में शिक्षा सूत्र और जाम्बवती विजय काव्य की गणना होती है ।

पाणिनीय शब्द अनुशासन सब प्रकार से पूर्ण और अद्वितीय है। पाणिनि ने संस्कृत को जीवित भाषा के रूप में ग्रहण कर उसका अत्यंत ही वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । भाषा को नाम आख्यात धातु उपसर्ग और निपात (अव्यय) इन चार मूलभूत तत्वों में विभाजित करते हुए उन्होंने धातु पर सबसे अधिक बल दिया है। उनकी शैली बहुत ही परिमार्जित और सारगर्भित है। अधिक से अधिक अर्थ को कम से कम शब्दों में प्रकट करना उनकी विशेषताएं हैं। इसके लिए उनको प्रत्याहारों, अनुबंधों, गणों, संज्ञाओं, अनुवृत्ति और कई जगह पर लागू होने वाले पूर्वत्रासिद्धम् (८.२.१.) सदृश सूत्रों का सहारा लेना पड़ता है। कहीं भी किसी शब्द का दो बार या व्यर्थ प्रयोग नहीं हुआ है। महर्षि पतंजलि का कथन है-

"दर्भपवित्रपाणि प्रामाणिक आचार्य ने शुद्ध एकांत स्थान में प्रांगमुख बैठकर अत्यंत प्रयत्न पूर्वक सूत्रों की रचना की है। अतः उनमें एक वर्ण भी अनर्थक नहीं हो सकता। इतने बड़े सूत्र के अनर्थक की तो बात ही क्या ? वास्तव में पाणिनि ने प्रत्येक शब्द को तोल- तोल कर रखा है। उनके व्याकरण के विषय में गागर में सागर वाली कहावत पूर्णतया चरितार्थ होती है। संक्षिप्तीकरण पर बल देते हुए भी उन्होंने भाषा के किसी भी पहलू को अछूता नहीं छोड़ा है। इसी बात को दृष्टि में रखते हुए जर्मन विद्वान अल्ब्रेख्ट वेबर ने लिखा है - पाणिनीय व्याकरण अन्य देशों के व्याकरण ग्रन्थों से भिन्न है। कुछ तो अपने धातुओं के पूर्ण और व्यापक अनुसंधान तथा शब्द निर्माण के कारण और कुछ अपनी सूक्ष्म संतुलित शैली के कारण। प्रसिद्ध भाषाविद् एल. ब्लू मफील्ड ने भी पाणिनीय व्याकरण की भूरि- भूरि प्रशंसा की है। उन का कथन है- यह व्याकरण मानवीय बुद्धि के महानतम कीर्ति स्तंभों में एक है। यह बड़ी ही सूक्ष्मता पूर्वक प्रत्येक विभक्ति या प्रत्यय, व्युत्पत्ति और रचना तथा सूत्रकर की भाषा संस्कृत के प्रत्येक प्रयोग का वर्णन करता है। आज तक किसी भी भाषा का इतना पूर्ण वर्णन नहीं हुआ है। पाणिनीय शब्दानुशासन केवल शब्द ज्ञान के लिए नहीं अपितु प्राचीन भारतीय संस्कृति के ज्ञान के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। उसके अध्ययन से तत्कालीन इतिहास और भूगोल आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार पाणिनीय व्याकरण का स्थान बहुत ही ऊंचा है।

- डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

भरतपुत्र तक्ष का विश्वविद्यालय " तक्षशिला "...

तक्षशिला विश्वविद्यालय वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी से १८ मील उत्तर की ओर स्थित था। जिस नगर में यह विश्वविद्यालय था उसके बारे में कहा जाता है कि श्री राम के भाई भरत के पुत्र तक्ष ने उस नगर की स्थापना की थी। यह विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय था, विश्व का दूसरा विश्विद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय है, जो मगध में वर्तमान बिहार राज्य के नालंदा जिला में स्थित है। तक्षशिला की स्थापना सातवीं ईसापूर्व में की गई थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय में,पूरे विश्व के १०५०० से अधिक छात्र अध्ययन करते थे। यहां ६० से भी अधिक विषयों को पढ़ाया जाता था। ३२६ ईस्वी पूर्व में विदेशी आक्रमणकारी सिकन्दर के आक्रमण के समय यह संसार का सबसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ही नहीं था, अपितु उस समय के चिकित्सा शास्त्र का एकमात्र सर्वोपरि केन्द्र था। तक्षशिला विश्वविद्यालय का विकास विभिन्न रूपों में हुआ था। इसका कोई एक केन्द्रीय स्थान नहीं था, अपितु यह विस्तृत भू भाग में फैला हुआ था। विविध विद्याओं के विद्वान आचार्यो ने यहां अपने विद्यालय तथा आश्रम बना रखे थे। छात्र रुचि अनुसार अध्ययन हेतु विभिन्न आचार्यों के पास जाते थे। महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों में यहां वेद-वेदान्त, अष्टादश विद्याएं, दर्शन, व्याकरण, अर्थशास्त्र, राजनीति, युद्धविद्या, शस्त्र-संचालन, ज्योतिष, आयुर्वेद, ललित कला, हस्त विद्या, अश्व-विद्या, मन्त्र-विद्या, विविद्य भाषाएं, शिल्प आदि की शिक्षा विद्यार्थी प्राप्त करते थे। प्राचीन भारतीय साहित्य के अनुसार पाणिनि, कौटिल्य, चन्द्रगुप्त, जीवक, कौशलराज, प्रसेनजित आदि महापुरुषों ने इसी विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। तक्षशिला विश्वविद्यालय में वेतनभोगी शिक्षक नहीं थे और नहीं कोई निर्दिष्ट पाठ्यक्रम था। आज कल की तरह पाठ्यक्रम की अवधि भी निर्धारित नहीं थी और न कोई विशिष्ट प्रमाणपत्र या उपाधि दी जाती थी। शिष्य की योग्यता और रुचि देखकर आचार्य उनके लिए अध्ययन की अवधि स्वयं निश्चित करते थे। परंतु कहीं-कहीं कुछ पाठ्यक्रमों की समय सीमा निर्धारित थी। चिकित्सा के कुछ पाठ्यक्रम सात वर्ष के थे तथा पढ़ाई पूरी हो जाने के बाद प्रत्येक छात्र को शोध कार्य करना पड़ता था। इस शोध कार्य में वह कोई औषधि की जड़ी-बूटी पता लगाता था तब जाकर उसे डिग्री मिलती थी।

अनेक शोधों से यह अनुमान लगाया गया है कि यहाँ बारह वर्ष तक अध्ययन के पश्चात दीक्षा मिलती थी। ५०० ई. पू. जब संसार में चिकित्सा शास्त्र की परंपरा भी नहीं थी तब तक्षशिला आयुर्वेद विज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र था। जातक कथाओं एवं विदेशी पर्यटकों के लेख से पता चलता है कि यहां के स्नातक मस्तिष्क के भीतर तथा अंतडिय़ों तक का आपरेशन बड़ी सुगमता से कर लेते थे। अनेक असाध्य रोगों के उपचार सरल एवं सुलभ जड़ी बूटियों से करते थे। इसके अतिरिक्त अनेक दुर्लभ जड़ी-बूटियों का भी उन्हें ज्ञान था। शिष्य आचार्य के आश्रम में रहकर विद्याध्ययन करते थे। एक आचार्य के पास अनेक विद्यार्थी रहते थे। इनकी संख्या प्राय: सौ से अधिक होती थी और अनेक बार ५०० तक पहुंच जाती थी। अध्ययन में क्रियात्मक कार्य को बहुत महत्व दिया जाता था। छात्रों को देशाटन भी कराया जाता था। शिक्षा पूर्ण होने पर परीक्षा ली जाती थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय से स्नातक होना उस समय अत्यंत गौरवपूर्ण माना जाता था। यहां धनी तथा निर्धन दोनों तरह के छात्रों के अध्ययन की व्यवस्था थी। धनी छात्र आचार्य को भोजन, निवास और अध्ययन का शुल्क देते थे तथा निर्धन छात्र अध्ययन करते हुए आश्रम के कार्य करते थे। शिक्षा पूरी होने पर वे शुल्क देने की प्रतिज्ञा करते थे। प्राचीन साहित्य से विदित होता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय में पढने वाले उच्च वर्ग के ही छात्र होते थे। सुप्रसिद्ध विद्वान, चिंतक, कूटनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री चाणक्य ने भी अपनी शिक्षा यहीं पूर्ण की थी। उसके बाद यहीं शिक्षण कार्य करने लगे। यहीं उन्होंने अपने अनेक ग्रंथों की रचना की। इस विश्वविद्यालय की स्थिति ऐसे स्थान पर थी, जहां पूर्व और पश्चिम से आने वाले मार्ग मिलते थे। चतुर्थ शताब्दी ई. पू. से ही इस मार्ग से भारत वर्ष पर विदेशी आक्रमण होने लगे। विदेशी आक्रांताओं (हुड़ों) ने इस विश्वविद्यालय को काफी क्षति पहुंचाई। हमें गर्व है ऐसे देदीप्यमान तक्षशिला विश्वविद्यालय पर।

- वान्या ६अ, तक्षशिला सदन

प्राचीन भारत का ऐतिहासिक विश्वविद्यालय "तक्षशिला विश्वविद्यालय "

तक्षशिला विश्वविद्यालय ६०० ईसवी पूर्व स्थापित किया गया था, माना जाता है कि इसकी स्थापना अयोध्या नरेश भगवान श्रीराम के अनुज भरत के पुत्र तक्ष ने की थी। जैसा कि आपको ज्ञात होगा कि प्राचीन भारत में शिक्षा, गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित थी, यह विश्वविद्यालय भी उसी परिपाटी का अनुसरण करता था।

गुरु अपने शिष्य को नि:स्वार्थ भाव से शिक्षा प्रदान करते थे और शिष्य अपने गुरु से समर्पण भाव से शिक्षा ग्रहण करते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय में प्रत्येक गुरु के पास लगभग ५०० छात्रों को पढ़ाने का उत्तरदायित्व होता था इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए कोई भी प्रवेश परीक्षा नहीं होती थी।

तक्षशिला विश्वविद्यालय में बौद्ध और हिंदू धर्म की शिक्षा,भाषा,अर्थशास्त्र,ज्योतिष,आयुर्वेद, राजनीति एवं युद्ध कला आदि लगभग १८ प्रमुख विषयों पर शिक्षा दी जाती थी।

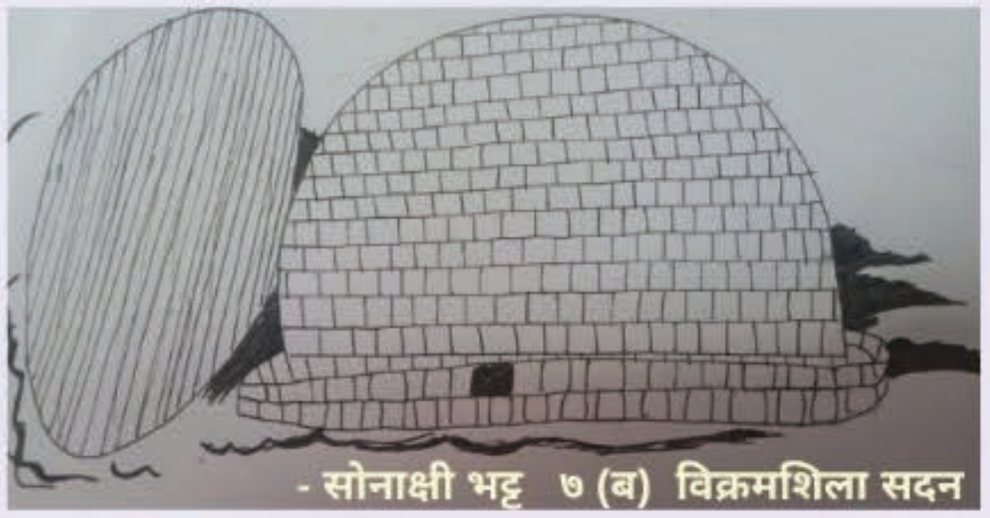

- सोनाक्षी भट्ट ७ (ब) विक्रमशिला सदन

संदर्भो के अनुसार महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा लिखी रामायण में अयोध्या नरेश भगवान श्री राम के भाई भरत ने अपने नानाजी शीलभद्र जी की सहायता से सिद्धक्षेत्र पर विजय प्राप्त करने के उपरांत उस जीते हुए संघ क्षेत्र को अपने दो पुत्रों तक्ष और पुष्पक को सौंप दिया था। भरत पुत्र पुष्पक ने पुष्पक वर्ली को अपनी राजधानी बनाया और तक्ष ने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया जिस वजह से उनके नाम पर तक्षशिला नगर की स्थापना हुई अतः इसका श्रेय भरत पुत्र राजकुमार तक्ष को जाता है।

आचार्य चाणक्य की तपस्थली " तक्षशिला "

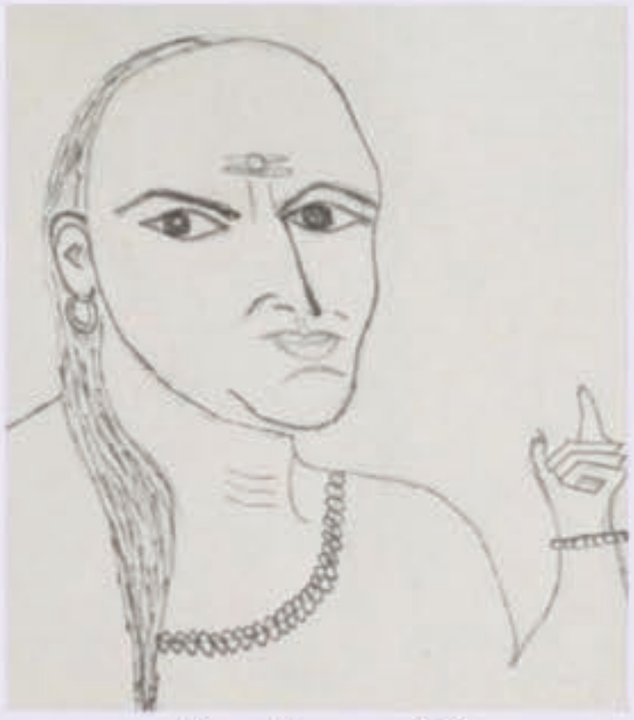

- खुशी, तृतीय, तक्षशिला सदन

आचार्य चाणक्य एक महान विद्वान थे । उनको कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है, उनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आचार्य चाणक्य ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई की फिर तक्षशिला विश्वविद्यालय में ही अर्थशास्त्र के बहुत अच्छे तथा सुयोग्य शिक्षक बने। आचार्य चाणक्य को लगभग हर विषय की जानकारी थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय देश विभाजन के बाद अब पाकिस्तान के शहर रावलपिंडी में है।

तक्षशिला शब्द संस्कृत भाषा से है जिसका अर्थ " राजा तक्ष " है। हमें तक्षशिला विश्वविद्यालय तथा आचार्य चाणक्य पर विशेष गर्व है।

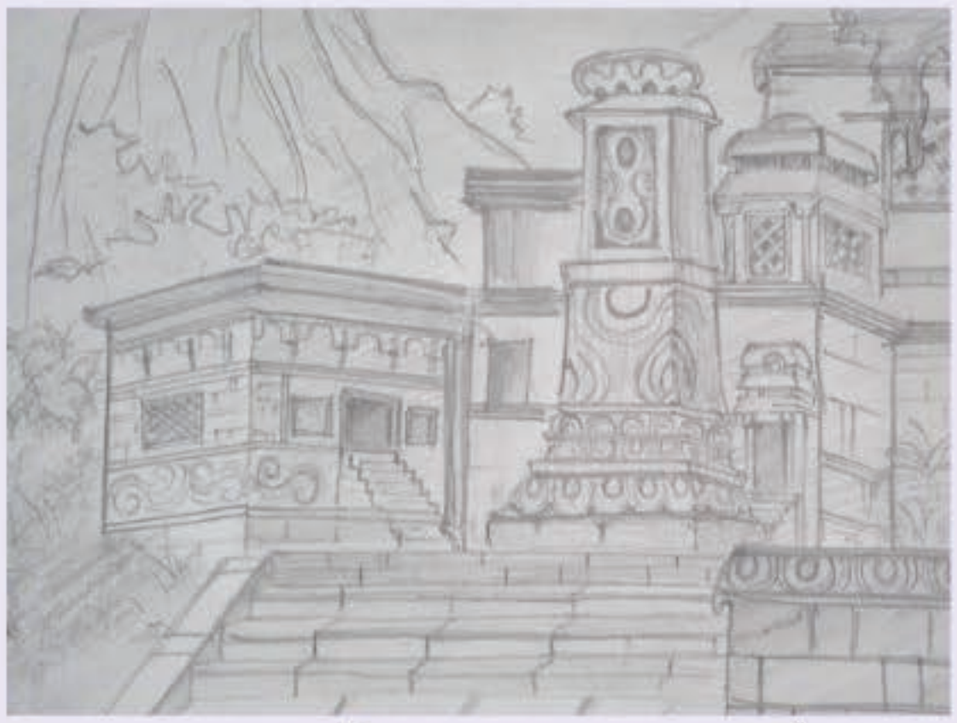

प्रेरणा बड़थ्वाल , ८ अ नालंदा सदन

मधुरं संस्कृतम् / वदतु संस्कृतम् - ३

" संस्कृत - क्रिया- अभ्यास: " (वर्तमान- काल:)

पठति - पढता है ।	पठामि - पढता हूं ।
लिखति - लिखता है।	लिखामि - लिखता हूं।
खादति - खाता है।	खादामि - खाता हूं।
पिबति - पीता है।	पिबामि - पीता हूं।
गच्छति - जाता है।	गच्छामि -जाता हूं।
आगच्छति - आता है।	आगच्छामि -आता हूं।
चलति - चलता है।	चलामि -चलता हूं।
धावति - दौड़ता है ।	धावामि - दौड़ता हूं।
वदति - बोलता है।	वदामि - बोलता हूं।
क्रीडति - खेलता है।	क्रीडामि- खेलता हूं।
खेलति - खेलता है।	खेलामि -खेलता हूं।

नमति - नमस्कार करता है।-नमामि - नमस्कार करता हूं।

सत्यं वद धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः।

–तैतिरीयोपनिषद् १.११.१

सत्य बोलो, धर्म का पालन करो,
स्वाध्याय से प्रमाद नहीं करो।

**Speak the truth, Follow dharma,
Make no deviation from study.**

वान्या गैरोला , ६अ
तक्षशिला सदन

ऋद्धि सोनी ६ अ
विक्रमशिला सदन

" विश्ववन्दिता वैशाली ... "

वैशाली गणतंत्रस्य जन्मभूमि: वर्तते। सम्प्रति बिहार- राज्यस्य तीरभूक्ति (तिरहुत) प्रमण्डलस्य वैशाली नाम मण्डलं (जिला) वर्तते। एतस्य मुख्यालय: हरिपुरम् (हाजीपुरम्) अस्ति। इत: 15 -20 किलोमीटर दूरे वैशाली अद्यापि स्वकीयम् प्राचीनवैभवम् निदर्शयति। वैशालीं परित: अनेकानि दर्शनीयस्थानानि सन्ति। "विश्ववन्दिता वैशाली " इति शीर्षक-पद्यम् आधुनिक- भाषाशैलीम् अनुसृत्य विरचितं वर्तते। अत्र वैशालीमहत्त्वं संक्षिप्ततया वर्णितम् अस्ति।

रामायण- पुराणादिषु विशाला मिथिला-तीरभुक्ति- विदेहादिनामभि: विख्यातं गण्डकीगंगाकौशिकीहिमालयपरिवृते क्षेत्रमेव कालान्तरे वैशाली नाम्ना इतिहासे प्रसिद्धं बभूव। गणतंत्रस्य प्रथम- सूर्योदय: वैशाली- धरायां जात: , यस्य दिव्य- प्रकाशेन समस्तसंसारे गणतंत्रं प्रसृतं विकसितं च। अत्र आम्रवाली नाम नगरवधु: प्रतिष्ठाप्रकर्षं प्राप्तवती आसीत्। तस्या: गृहे भगवान् गौतमबुद्ध: स्वयमेव आगत्य भोजनं स्वीकृतवान् आसीत्। महावीरस्य जैनतीर्थंकरस्य जन्मभूमि: वैशाली आसीत्।अत्र भगवान् बुद्धोऽपि अनेकवारम् आगतवान् आसीत्। वाल्मीकिरामायणे विशाला-मिथिला चेति द्वे राज्ये पृथक् पृथक् शासकाभ्यां शासिते स्त:।

एतादृशभाव- भूमौ गीतमिदं रोचकं वृत्तान्तं प्रस्तौति रचनाकार: डॉ.वैद्यनाथ मिश्र: ।

१. "वैशाली थ्रू द एजेज " इति डॉ.योगेन्द्र- मिश्रस्य वैशाली- विषयकम् इतिहासपुस्तकं पठित्वा ऐतिहासिकं महत्त्वं संक्षेपेण संग्रहणीयम्।

२. डॉ.गोविंदठक्कुरस्य "मिथिला का इतिहास " इति पुस्तकं पठित्वा प्राचीनकालत: वैशाल्या: क्रमिक: इतिहास: ज्ञातव्य:।

" विश्ववन्दिता वैशाली ... "

प्रवहति गंगा दक्षिणभागे शुभा गण्डकी पश्चिमभागे ।
नृपविशालकुलपुरी वरेण्या विश्ववन्दिता वैशाली ।।१।।

पुरा विशाला नगरी रम्या सस्यश्यामला अरिभिरगम्या ।
रामलक्ष्मणाभ्यां विलोकिता विश्ववन्दिता वैशाली ।।२।। ..... विश्व...

या सीता-जनिका विशिष्यते या जिनेन्द्रजननी प्रशस्यते ।
या विदेहजनकादिसेविता विश्ववन्दिता वैशाली ।।३।। ..... विश्व...

यस्यां बुद्धकृता उपदेशाः सत्याहिंसादिकसन्देशाः ।
आम्रपालिका कलासाधिका विश्ववन्दिता वैशाली ।।४।। ..... विश्व...

यत्राशोक-निर्मितः स्तूपः स्तम्भः पुष्करिणी अथ कूपः ।
यस्या धरा कीर्तिमातनुते विश्ववन्दिता वैशाली ।।५।। ..... विश्व...

यत्र लिच्छिवी-बज्जिक-संघाः गणनिष्ठाः सुध्यिश्च गुणौघाः ।
प्रजापालने ते विख्याताः विश्ववन्दिता वैशाली ।।६।। ..... विश्व...

शासनविधौ प्रकृष्टं तन्त्रं संविधनसहितं गणतन्त्रम् ।
यस्य समुदयो यत्र प्रथमतः विश्ववन्दिता वैशाली ।।७।। ..... विश्व...

यत्र जनानां वरं जनेभ्यः जनैः शासनं प्रियं समेभ्यः ।
जनतन्त्रं गणतन्त्र-दिशैव विश्ववन्दिता वैशाली ।।८।। ..... विश्व...

- डॉ.वैद्यनाथ मिश्र:

" वरमेको गुणी पुत्रः "

(कुल की ख्याति के लिए एक सुकर्मी सुपुत्र ही पर्याप्त है)

भारतीय- शास्त्रों के अनुसार एक सुशिक्षित तथा गुणवान पुत्र अपने सम्पूर्ण कुल को सूर्य के समान प्रकाशित कर देता है। जिस प्रकार किसी बाग का एक ही सुगन्धित पुष्प चारो ओर सुगंध से सुवासित कर देता है उसी प्रकार एक सुपुत्र अपने सुकर्मों से संसार में कुल की ख्याति फैला देता है। इन श्लोकों का उद्देश्य उत्तम मानवीय गुणों को विकसित करना है। आप सभी से निवेदन है कि विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों से चयनित इन महान श्लोकों को बच्चों को अवश्य ही पढ़ायें ताकि उनका जीवन ज्योतिर्गमय हो सके।

१. एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन भाषते।
कुलं पुरुषसिंहेन यथा चन्द्रेण शर्वरी ।।

अर्थात् विद्या से युक्त एक पुरुषसिंह (बलशाली/ताकतवर) सुपुत्र से सम्पूर्ण कुल उसी तरह चमकने लगता है जिस तरह एक चन्द्रमा के प्रकाश से सम्पूर्ण रात्रि।

२. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा सहस्रशः।।

अर्थात् सैंकड़ो मूर्ख पुत्रों से अच्छा एक गुणवान पुत्र है क्योंकि एक चंद्रमा ही अंधकार को दूर करता है, हजारों तारे नहीं

३. एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति रासभिः ।।

अर्थात् सिंही एक ही सुपुत्र के कारण निर्भय होकर सोती है परंतु (कुपुत्रों के कारण) गदही अपने १० पुत्रों के साथ भार (बोझ) ढोती रहती है।

४. प्रदोषे दीपकः चन्द्रः प्रभाते दीपकः रविः ।
त्रैलोक्ये दीपकः धर्मः सुपुत्रः कुलदीपकः ।।

अर्थात् संध्या काल में चंद्रमा दीपक होता है, सुबह के समय सूर्य दीपक होता है, तीनों लोकों का दीपक धर्म होता है और कुल का दीपक सुपुत्र होता है, संस्कारी बेटा।

५. यदि पुत्रः कुपुत्रः स्यात् व्यर्थो हि धनसंचयः ।
यदि पुत्रः सुपुत्रः स्यात् व्यर्थो हि धनसंचयः ।।

अर्थात् यदि पुत्र कुपुत्र हो तब भी धन का संग्रह बेकार है तथा यदि पुत्र सुपुत्र हो तब भी धन का संग्रह बेकार है।

६.कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः ।
काणेन चक्षुषा किं वा चक्षुः पीडैव केवलम् ।।

अर्थात् पुत्र के जन्म लेने से क्या लाभ जो न विद्वान् हो और ना धार्मिक हो ? एक आंख से क्या लाभ जो केवल पीड़ा ही देती है।

७. अविनीतः सुतो जातः कथं न दमनात्मकः ।
विनीतस्तु सुतो जातः कथं न पुरुषोत्तमः ।।

अर्थात् (कुल में) अविनीत पुत्र जन्म लेने पर क्यों नहीं दुःखकारक (जलाने वाला) होगा ? यदि (कुल में) विनयशील पुत्र उत्पन्न हुआ तो वह क्यों नहीं पुरुषों में उत्तम होगा ? (अर्थात् वह कल पुरुषोत्तम का कुल कहा जाएगा।)

८. किं जातैर्बहुभिः पुत्रैः शोक-संतप्तकारकैः ।
वरमेकः कुलवल्लभो यत्र विश्राम्यते कुलम् ।।

अर्थात् बहुत से शोकसंतप्त करने वाले पुत्रों के जन्म लेने से क्या लाभ ? कुलवल्लभ एक ही पुत्र श्रेष्ठ है जो संपूर्ण कुल को शांति प्रदान करता है।

- नीतिशास्त्रों से संग्रहीत

प्रतियोगिता सहभागिता पुरस्कार

श्रीमद्भगवद्गीता श्लोकपाठ पुरस्कार- आनिया राणा ७ अ
कबीर दोहावली पुरस्कार - आद्रिका बिष्ट - ४अ
यह पुरस्कार स्प्रिंग हिल्स स्कूल देहरादून द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि 93.5 FM देहरादून की प्रमुख रजत शक्ति द्वारा प्रदान किया गया।
मानव भारती स्कूल के प्रधानाचार्य श्री अजय गुप्ता तथा संस्कृत अध्यापक डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी ने भी इन बच्चों को स्कूल की प्रार्थना सभा में सम्मानित किया।

नव नूतन वर्ष (2024) में लिखेंगे हम मिलकर एक कहानी...

लीजिए, फिर से एक और नव नूतन वर्ष आ चुका है। वैसे हर बार की तरह यह "नव नूतन वर्ष " जब भी आता है तो अपने साथ नई उम्मीदें और आशाएं लेकर आता है और हमारे भीतर दम तोड़ती ख्वाहिशों में फिर से प्राण फूंक जाता है। देखा जाए तो इस नए साल में नए जैसा कुछ भी नहीं होता है, सब कुछ वैसे का वैसा ही होता है।
बस वही हाल, वही चाल, वही दुश्वारी, वही लाचारी, वही विवाद, वही संवाद, वही जिम्मेदारी, वही नादानी, वही त्यौहार, वही गीत, वही पकवान, वही अनुष्ठान, वही आसक्ति, वही आपत्ति, वही नज़रिया, वही खबरिया, वही दिन, वही रात, वही महीना, वही हफ्ता, वही घड़ी और तो और वही तारीख। कुछ भी तो नहीं बदलता न।
लेकिन शायद एक चीज़ है जो बदलती है और वो है इस 'वही' को बदलने की चाह और जज़्बा ! वो चाह जो बीते साल में किन्हीं विपरीत परिस्थितियों के चलते हमारे भीतर दम तोड़ गई थी।
साल बीतता है तो हम बीते साल का हिसाब लगाने लगते हैं। बहुत सिलसिलेवार ढंग से न भी तो भी एक तस्वीर उभरकर आ जाती है। मसलन पिछले साल आज के दिन हम क्या कर रहे थे। हमारी चिंता उस समय क्या थी। हमारे आस-पास कौन थे। स्मृतियाँ बहुत अजीब होती हैं। एक क्षण हमें ख़ुश कर जाती हैं दूसरे ही क्षण उदास। पर हम मुड़कर देखें तो हम इन्हीं स्मृतियों के सहारे जीते हैं।
हम एक ख़राब समय से गुजर रहे हैं। ये ख़राब बस ये कहने भर में नहीं है कि कल बहुत अच्छा हो जाएगा। हम आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की बहस करने वाली दुनिया के लोग फिलिस्तीन में बच्चों की हत्या कर रहे हैं। हम जितना तरक्की कर रहे हैं उतने ही बर्बर हो रहे हैं। नए साल में कुछ नया तब होगा जब हमारे भीतर कुछ नया घटित होगा। कुछ ऐसा कि हमारे आसपास की दुनिया थोड़ी और मुलायम, थोड़ी और खूबसूरत, थोड़ी और प्रेमिल, थोड़ी और निरापद दिखे। सड़कों पर मानसिक दरिद्रता के भोंडे प्रदर्शन के बज़ाय आने वाले साल के लिए कुछ सार्थक सोचें और करें। खाए-अघाए लोगों के साथ मस्ती करने की जगह कुछ खुशियां उनके साथ बांटे जिन्हें उनकी वाक़ई ज़रुरत है। थोड़ी मुस्कान उन होंठों पर धरें जो मुस्कुराना भूल गए हैं। जो अपने अरसे से रूठे बैठे हैं, उन्हें मना लें। क्षमा मांग लें उनसे जीवन के किसी मोड़ पर जिनका दिल दुखाया है हमने। बासी पड़ चुके रिश्तों में फिर से ताजगी भरें।
नव नूतन वर्ष की ढेर सारी मंगलमय कामनाओं के साथ सब के जीवन की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं ।

- अजीत मिश्रा " साहित्य सेवी "

आत्मानं विद्धि

Manava Bharati India International School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, (Dr. Anantmani Trivedi - 7351351098)
मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।
संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी, डिजाइन - विशाल लोधा